सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूँ। शिव भगवानुवाच - ''हर एक बच्चे के चेहरे पर चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे राह है.... मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है....हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है.... पांव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है...ऐसा भाग्य हरेक के चेहरे में चमक रहा है... ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्माएँ भी सोचती हैं, इन्हों को क्या मिला है ! तो आप क्या जवाब देंगे ? जो पाना था सो पा लिया...।''

२. योगाभ्यास- अ. बापदादा से मिलन के दृश्य को याद करें और जैसे साकार में बापदादा के सामने मग्न होकर बैठते हैं, वैसे ही मग्न होकर मिलन मनाएँ...।

ब. सम्पूर्ण स्वरूप और भविष्य देव स्वरूप का नशा - अपने फरिश्ता स्वरूप को अपने सामने देखें कि वो कितना तेजस्वी है ...कितना दिव्य है...सर्व गुणों व शक्तियों से सम्पन्न है...साक्षात् बाप समान है...बस अब मैं भी वैसा बना कि बना...साथ ही अपने देव स्वरूप को भी देखें...जैसे ब्रह्मा बाबा को अपने भविष्य का नशा था, वैसा ही नशा स्वयं को चढायें...कभी फरिश्ता चोला धारण करें तो कभी दैवी चोला...।

स. मैं मास्टर ज्ञान सूर्य, ज्ञान सूर्य से किरणें लेकर सारे विश्व से माया के जर्म्स को नष्ट कर रहा हूँ...।

३. धारणा - संतुष्टता - संतुष्टमणि की चमक सारे संसार में फैलती है...जहाँ संतुष्टता है, वहाँ सर्व शक्तियाँ हैं...इसलिये हर हाल में चाहे जय हो या पराजय, अवसर मिले या न मिले, महिमा हो या न हो, हमें संतुष्ट रहना है...। - शास्त्रों में कहा गया है - 'संतोष से बडा धन इस संसार में दूसरा नहीं है।'

४. चिंतन - लिस्ट बनाएँ कि बाबा से हमें - बाप के रूप में क्या प्राप्तियाँ हुई ? - टीचर के रूप में क्या प्राप्तियाँ हुई ?- सद्गुरू के रूप में क्या प्राप्तियाँ हुई ?

५. साधकों प्रति - प्रिय साधकों ! संसार में हलचल बढती जा रही है। माया की हलचल, लोभ के कारण हलचल, समस्याओं के कारण हलचल, मानसिक अशांति और तनाव के कारण हलचल, सम्बन्धों में स्वार्थ के कारण हलचल...ये हलचल कम नहीं होंगी वरन् दिनों-दिन और ही बढती जायेंगी...ऐसे में हमें अपनी स्थिति को भी अचल बनाना है और दूसरों को भी अचल बनने में मदद करना है, उन्हें श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देने हैं...याद रहे, ये काम वही साधक कर सकेंगे जो व्यर्थ से मुक्त होंगे, जिनका योग श्रेष्ठ होगा और जो पवित्रता की शक्ति में सम्पन्न होंगे।

दूसरा सप्ताह

१. स्वमान - मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ।

- स्वदर्शनचक्र व्यर्थ रूपी माया को नष्ट कर देता है। स्वदर्शनचक्र हमें यह स्मृति दिलाता है कि ड्रामा पूरा हुआ, अब घर जाना है। यह घर जाने की स्मृति हमें व्यर्थ समय गँवाने से मुक्त कर देती है।

२. योगाभ्यास -अ. 'अब घर जाना है' - जैसे प्यारी मनमोहिनी दीदी ने घर जाने की धुन लगा दी थी... बारंबर वो यही याद दिलाया करती थी कि अब घर जाना है...दादीजी ने भी धुन लगा दी थी कि अब कर्मातीत बनना है...स्वदर्शनचक्र फिराते हुए हम भी यही धुन लगा दें कि अब वापस घर चलना है और स्वयं को कर्मातीत बनाना है...ये स्मृतियाँ हमें व्यर्थ से मुक्त कर देंगी...।

ब. भगवानुवाच -'यदि तुम बाप की याद में हर कदम उठाते हो तो तुम्हारे हर कदम में पद्म जमा होते हैं और यदि याद में कदम नहीं उठाते तो पद्मों का नुकसान हो जाता है। तो हम अपने अमूल्य समय को व्यर्थ बातों में ना गँवाकर, अपना हर कदम बाबा की याद में ही उठायें।

स. भगवानुवाच - 'जिस श्वाँस में बाबा की याद है, वही श्वाँस सफल है, बाकि निष्फल है।' तो हम श्वाँसों-श्वाँस बाबा को याद कर अपनी हर श्वाँस सफल करें।

३. धारणा - नाउ ऑर नेवर- - ब्रह्मा बाबा ने प्रारम्भ से ही स्वयं के लिए और बच्चों के लिए यही स्लोगन रखा कि अब नहीं तो कभी नहीं। चाहे बात स्वउन्नति की रही हो या सेवा की, बाबा ने हमेशा इस मंत्र को अमल में लाया। इसीलिये वे नंबर वन बन गए। हम भी इस मंत्र को अपनी धारणा में ले आयें। स्वउन्नति और ईश्वरीय सेवा के लिए कहें 'अभी-अभी' और यदि व्यर्थ आये तो उसे कहें 'फिर कभी'।

४. चिंतन -- कहाँ-कहाँ हम व्यर्थ में समय गँवाते हैं ? - क्यों गँवाते हैं हम व्यर्थ में अपना समय ? - कैसे करें अपने एक-एक पल को सफल ?

- संगमयुगी समय के लिए बाबा के अनमोल महावाक्य ?

५. साधको प्रति - प्रिय साधकों ! कहा जाता है कि समय और तूफान किसी का इंतजार नहीं करते। जो वक्त बीत जाता है, वह इतिहास बन जाता है। संसार की सारी दौलत और ताकत लगाकर भी बीते हुए वक्त को वापस नहीं लाया जा सकता। रह जाती हैं तो केवल कुछ खुशनुमा यादें अथवा पश्चाताप्। हम संगम के अनमोल समय को बाबा की याद व सेवा में ही बितायें ताकि जीवन की अंतिम घडियों में जब हम पीछे मुडकर देखें तो पश्चाताप् के लिए उसमें कोई स्थान न हो, हो तो केवल आनंद ही आनंद, संतोष ही संतोष...।

जीवन में शांति...

पेज 12 का शेष...

मन शांत हो जाता है और समाधान प्राप्त हो जाता है। बहुत बडा आदमी बनने के लिए बहुत बडे गुण का होना आवश्यक नहीं बल्कि छोटे-छोटे गुण ही उन्हें बडा बनाते हैं। महान आत्माएं अपने कार्य को कुछ अलग ढंग से करती हैं। दिप्ती संजगिरी, निदेशिका, एच.आर.डी. डिपा. भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड ने कहा कि परिवर्तन पहले स्वयं में लाना आवश्यक है लेकिन इसमें हर दिन हमें नई चुनौतियों का सामना करना पडता है। इस संस्था में जितने प्रभावी ढंग से संगठित रूप से परिवर्तन का कार्य चल रहा है वह प्रेरणादायी है। आंतरिक शांति के लिए पहले स्वयं को जानना जरूरी है। जब तक हम स्वयं को नहीं समझे हैं तब तक हम अपनी क्षमता का उपयोग नहीं कर सकते।डॉ. पी.सी. पतंजली, पूर्व उपकुलपति ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि 1963 में जब मैं दिल्ली में अध्ययनरत था तो वहाँ ब्रह्माकुमारीज के पहले सेन्टर कमला नगर में मेरा जाना हुआ था। मुझे यह अनुभव हुआ कि हमारी पढाई तो सांसारिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए है लेकिन यहाँ की आध्यात्मिक पढाई आत्मा को परमात्मा से जुडने का मार्ग बताती है तथा व्यक्ति को सही अर्थ में व्यक्ति बनाती है। ब्रह्माकुमारी संस्था के भाई-बहनों की कथनी व करनी में समानता है। यहाँ के भाई-बहनें प्रसन्न, शांत व हर परिस्थिति में विनम्र रहते हैं। यहाँ आने से यह भासना आती है कि हम स्वर्ग में आ गये हैं।उद्घाटन कार्यक्रम संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गीता बहनजी ने किया और सभी का आभार प्रगट ब्र.कु. मोहन भाई पटेल ने किया।

जीवन में खुशी...

पेज१२ का शेष

उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता के अभ्यास से ही जीवन में सच्ची शांति प्राप्त की जा सकती है जिससे ही विश्व बन्धुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना साकार हो सकती है। केन्द्रीय वित्त मंत्रालय के सचिव हलीम खाँ एवं एम्स के निदेशक डा. रमेश डेका ने भी अपने विचार रखे।ब्र.कु. पुष्पा ने सामूहिक राजयोग का अभ्यास कराया॥ ब्र.कु. गिरिजा बहन जी ने सभी का स्वागत किया एवं ब्र.कु. पीयूष भाई साहब ने कुशल मंच संचालन किया।कार्यशाला में इंजीनियर्स इंडिया लि., गेल इंडिया लि., इंडियन ऑयल कार्पो. लि., ओ.एन.जी.सी., सेल, एन.टी.पी.सी., ऑयल इंडिया लि., नेशनल फर्टीलाइजर्स लि., एम्स, भारत मौसम विज्ञान विभाग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

एकओंकार...

पेज१ का शेष

उद्देश्य के बारे में बताते हुए राजयोगी बी. के. बृजमोहन ने कहा कि भगवत गीता का मुख्य सार यही है कि हम अपने को आत्मा समझकर सर्व आत्माओं के पिता परमपिता परमात्मा शिवजी की स्मृति में रहकर अगर हम अपने सांसारिक कर्त्तव्य करें तो गीता वचन अनुसार समाज में धरा पर विश्व शान्ति सद्भावना एवं विश्व बन्धुत्व का वातावरण निर्माण किया जा सकता है तथा स्वर्णिम युग की पुर्नस्थापना हो सकती है। अन्त में ब्रह्माकुमारी संस्था के दिल्ली स्थित श्रीफोर्ट सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी बी.के. शान्ति ने सामूहिक योगाभ्यास कराते हुए कहा कि राजयोग के नियमित अभ्यास से आंतरिक शांति एवं क्षमता में वृद्धि होती है जिससे हम मानवीय मूल्य एवं सात्विक जीवन प्रणाली को अपना सकते हैं और जीवन में तथा समाज में सच्चा सुख और शांति पुर्नस्थापना कर सकते हैं।

वेदनगर-उज्जैन। नवरात्रि आध्यात्मिक प्रवचनमाला कार्यक्रम के शुभारंभ में दीप प्रज्जवलित करते हुए केबिनेट मंत्री पारस जैन, उद्योगपति माहेश्वरी , लीड बैंक मैनेजर गोविन्द बंसल, ब्र.कु. उषा बहन एवं ब्र.कु. रूचि

अमरावती। 'विश्व परिवर्तन भवन' में अपना मनोगत व्यक्त करते हुए परमश्रद्देय, परम पूज्यनीय आदरणीय श्री देवकीनंदन ठाकुर महाराज तथा संचालिका ब्र.कु. सीता एवं लष्पी सेठ जाजोदिया।

आर्बी। समाज उत्थान अभियान का उद्घाटन करते हुए आमदार केचे साहेब, भार्गवर्ताय राम राम महाराज, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

बैंगलोर। संगमतीर्थ कला और सांस्कृतिक विभाग से मधुर गीत संध्या कार्यक्रम के अवसर पर डॉ. एस. जानकी दक्षिण भारत के प्रसिद्ध गायिका को सम्मानित किया गया। समूह चित्र में दादी सरला , डायरेक्टर के.एस.एल. स्वामी तथा अन्य अतिथि।

बार्शी। समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए ब्रं.कु. शीला बहन, ब्र.कु. प्रेम भाई, सायनेस क्लब प्रेसिडेंट डॉ. उर्मिल लायक्त, स्नेहा बहन, दिया बहन, समाजसेवक प्रकाश मोरे, नरेश गुप्ता।

डौंडी लोहारा। चैतन्य झांकी के उद्घाटन करने के बाद विधायक विरेन्द्र साहू, गुण्डरदही धर्मेन्द्र गाडियोक , अध्यक्ष भाजयुमो बालोद, ब्र.कु. लता तथा अन्य।